



# Dimpal paliwal

06 Jan 1988

05:50 PM

Indore

Model: Web-MyKundli

Order No: 120962501

## सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग \_\_\_\_\_: स्त्रीलिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: **06/01/1988**  
दिन \_\_\_\_\_: बुधवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: **17:50:50** घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 26:46:40 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: **Indore**  
राज्य \_\_\_\_\_: Madhya Pradesh  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 22:42:00 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 75:54:00 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: -00:26:24 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 17:24:26 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: -00:05:29 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 00:25:41 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 07:08:10 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 17:55:48 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 10:47:38 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: उत्तरायण  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: दक्षिण  
ऋतु \_\_\_\_\_: शिशिर  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 21:42:15 धनु  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 21:27:24 मिथुन

#### अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: मिथुन - बुध  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: कर्क - चन्द्र  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: आश्लेषा - 1  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: बुध  
योग \_\_\_\_\_: विष्कुम्भ  
करण \_\_\_\_\_: वणिज  
गण \_\_\_\_\_: राक्षस  
योनि \_\_\_\_\_: मार्जार  
नाड़ी \_\_\_\_\_: अन्त्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: विप्र  
वश्य \_\_\_\_\_: जलचर  
वर्ग \_\_\_\_\_: श्वान  
युँजा \_\_\_\_\_: मध्य  
हंसक \_\_\_\_\_: जल  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: डी-डिंपल  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: रजत - रजत  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: मकर

## पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_ :  
पिता का नाम \_\_\_\_\_ :  
माता का नाम \_\_\_\_\_ :  
जाति \_\_\_\_\_ :  
गोत्र \_\_\_\_\_ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1909	पौष	16
पंजाबी	संवत : 2044	पौष	22
बंगाली	सन् : 1394	पौष	21
तमिल	संवत : 2044	मार्गड़ी	22
केरल	कोल्लम : 1163	धनु	22
नेपाली	संवत : 2044	पौष	22
चैत्रादि	संवत : 2044	माघ	कृष्ण 2
कार्तिकादि	संवत : 2044	पौष	कृष्ण 2

### पंचांग

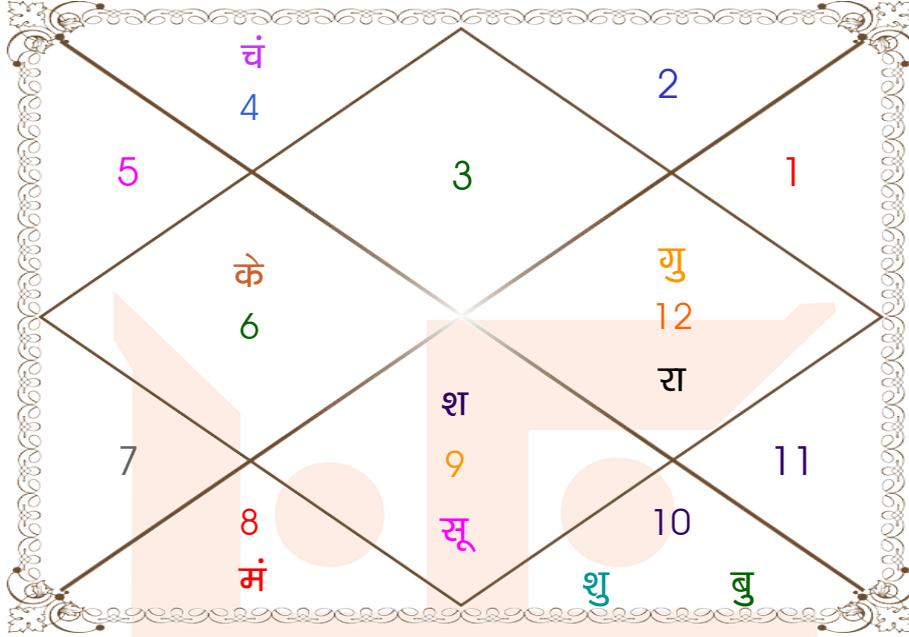
सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_ : 2  
तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 11:41:58  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_ : 3  
सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_ : पुष्य  
नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 14:10:28 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : आश्लेषा  
सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_ : विष्कुम्भ  
योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 23:43:25 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : विष्कुम्भ  
सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_ : गर  
करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 11:41:58 घंटे  
जन्म करण \_\_\_\_\_ : वणिज  
भयात \_\_\_\_\_ : 09:10:57  
भभोग \_\_\_\_\_ : 67:39:52  
भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_ : बुध 14 वर्ष 8 मा 7 दि

### घात चक्र

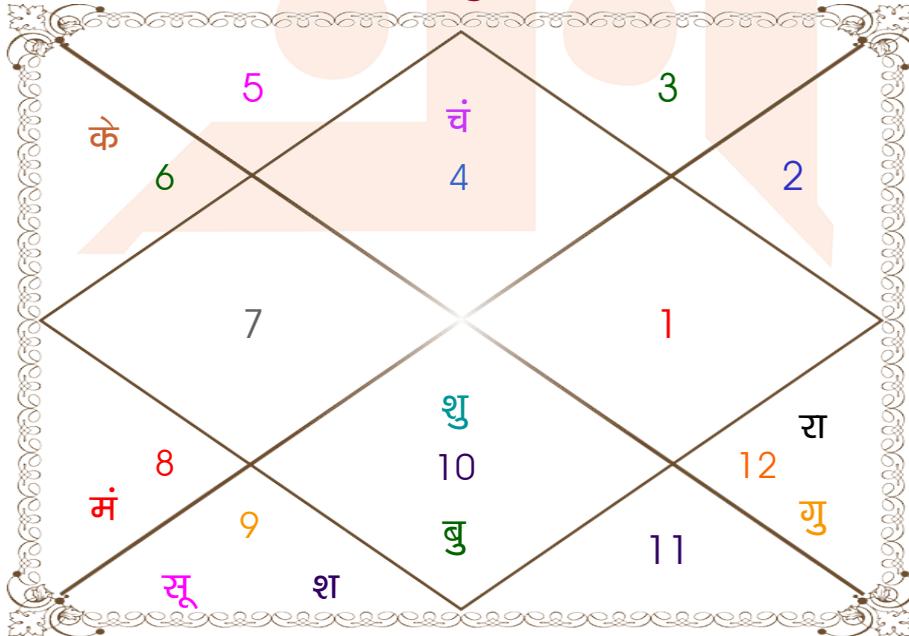
मास \_\_\_\_\_ : पौष  
तिथि \_\_\_\_\_ : 2-7-12  
दिन \_\_\_\_\_ : बुधवार  
नक्षत्र \_\_\_\_\_ : अनुराधा  
योग \_\_\_\_\_ : व्याघात  
करण \_\_\_\_\_ : नाग  
प्रहर \_\_\_\_\_ : 1  
वर्ग \_\_\_\_\_ : मेष  
लग्न \_\_\_\_\_ : तुला  
सूर्य \_\_\_\_\_ : सिंह  
चन्द्र \_\_\_\_\_ : मीन  
मंगल \_\_\_\_\_ : कन्या  
बुध \_\_\_\_\_ : मिथुन  
गुरु \_\_\_\_\_ : तुला  
शुक्र \_\_\_\_\_ : वृश्चिक  
शनि \_\_\_\_\_ : कर्क  
राहु \_\_\_\_\_ : धनु

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुण्डली



## चन्द्र कुण्डली



# लग्न कुण्डली और दशा

## लग्न कुंडली

रा गु			ल
			चं
शु बु			
श सू	मं		के

## लग्न कुंडली

		रा गु	
ल			
	चं		शु बु
			सू श
	के		मं

विंशोत्तरी  
बुध 14वर्ष 8मा 7दि  
बुध

06/01/1988

14/09/2105

बुध	14/09/2002
केतु	13/09/2009
शुक्र	13/09/2029
सूर्य	14/09/2035
चन्द्र	13/09/2045
मंगल	13/09/2052
राहु	14/09/2070
गुरु	14/09/2086
शनि	14/09/2105

योगिनी

भामरी 3वर्ष 5मा 14दि  
भामरी

21/06/2023

21/06/2027

भामरी	01/12/2023
भद्रिका	21/06/2024
उल्का	19/02/2025
सिद्धा	30/11/2025
संकटा	21/10/2026
मंगला	01/12/2026
पिंगला	20/02/2027
धान्या	21/06/2027

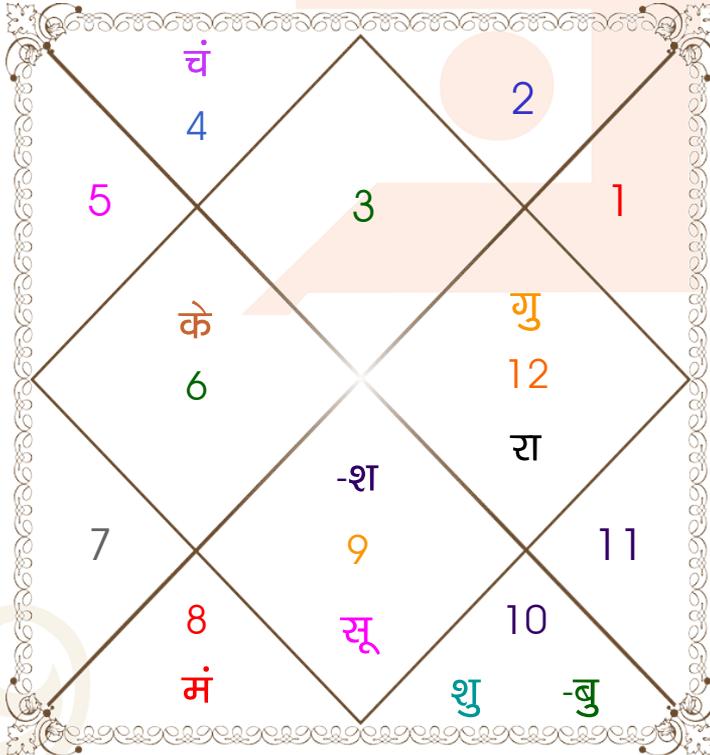
## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मिथु	21:27:24	318:44:40	पुनर्वसु	1	7	बुध	गुरु	गुरु	---
सूर्य			धनु	21:42:15	01:01:08	पूर्वाषाढा	3	20	गुरु	शुक्र	गुरु	मित्र राशि
चंद्र			कर्क	18:28:51	11:50:53	आश्लेषा	1	9	चंद्र	बुध	बुध	स्वराशि
मंगल			वृश्चि	04:53:44	00:39:52	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	शनि	स्वराशि
बुध		अ	मक	00:10:51	01:38:48	उत्तराषाढा	2	21	शनि	सूर्य	राहु	सम राशि
गुरु			मीन	26:54:16	00:04:26	रेवती	4	27	गुरु	बुध	गुरु	स्वराशि
शुक्र			मक	25:06:03	01:13:40	धनिष्ठा	1	23	शनि	मंगल	राहु	मित्र राशि
शनि			धनु	02:24:32	00:06:50	मूल	1	19	गुरु	केतु	शुक्र	सम राशि
राहु		व	मीन	01:51:49	00:09:10	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	राहु	सम राशि
केतु		व	कन्या	01:51:49	00:09:10	उ०फाल्गुनी	2	12	बुध	सूर्य	गुरु	शत्रु राशि
हर्ष			धनु	04:17:56	00:03:31	मूल	2	19	गुरु	केतु	चंद्र	---
नेप			धनु	14:18:16	00:02:15	पूर्वाषाढा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	---
प्लूटो			तुला	18:26:28	00:01:22	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	चंद्र	---
दशम भाव			मीन	13:18:05	--	उ०भाद्रपद	--	26	गुरु	शनि	राहु	--

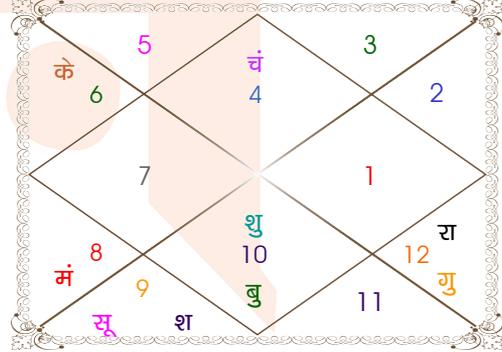
व - वकी स - स्थिर  
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त  
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:41:24

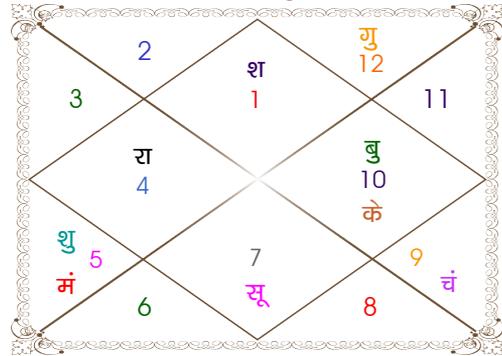
### लग्न-चलित



### चंद्र कुंडली



### नवमांश कुंडली



## चलित तथा निरयण भाव चलित

### चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मिथुन 05:05:51	मिथुन 21:27:24
2	कर्क 05:05:51	कर्क 18:44:18
3	सिंह 02:22:44	सिंह 16:01:11
4	सिंह 29:39:38	कन्या 13:18:05
5	कन्या 29:39:38	तुला 16:01:11
6	वृश्चिक 02:22:44	वृश्चिक 18:44:18
7	धनु 05:05:51	धनु 21:27:24
8	मकर 05:05:51	मकर 18:44:18
9	कुम्भ 02:22:44	कुम्भ 16:01:11
10	कुम्भ 29:39:38	मीन 13:18:05
11	मीन 29:39:38	मेष 16:01:11
12	वृष 02:22:44	वृष 18:44:18

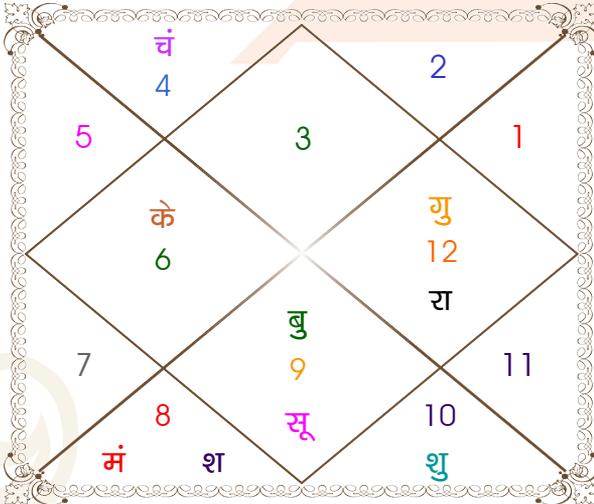
### निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मिथुन	21:27:24
2	कर्क	15:29:23
3	सिंह	12:15:32
4	कन्या	13:18:05
5	तुला	17:19:17
6	वृश्चिक	20:43:01
7	धनु	21:27:24
8	मकर	15:29:23
9	कुम्भ	12:15:32
10	मीन	13:18:05
11	मेष	17:19:17
12	वृष	20:43:01

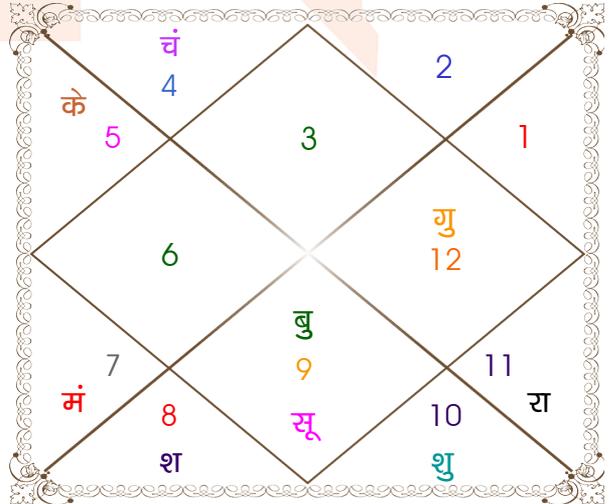
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य

### चलित कुंडली



### भाव कुंडली



## विंशोत्तरी दशा

### भोग्य दशा काल : बुध 14 वर्ष 8 मास 7 दिन

बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष
06/01/1988	14/09/2002	13/09/2009	13/09/2029	14/09/2035
14/09/2002	13/09/2009	13/09/2029	14/09/2035	13/09/2045
बुध 10/02/1988	केतु 10/02/2003	शुक्र 13/01/2013	सूर्य 01/01/2030	चंद्र 14/07/2036
केतु 06/02/1989	शुक्र 11/04/2004	सूर्य 13/01/2014	चंद्र 03/07/2030	मंगल 12/02/2037
शुक्र 08/12/1991	सूर्य 17/08/2004	चंद्र 14/09/2015	मंगल 07/11/2030	राहु 14/08/2038
सूर्य 14/10/1992	चंद्र 18/03/2005	मंगल 13/11/2016	राहु 02/10/2031	गुरु 14/12/2039
चंद्र 15/03/1994	मंगल 14/08/2005	राहु 14/11/2019	गुरु 20/07/2032	शनि 15/07/2041
मंगल 12/03/1995	राहु 02/09/2006	गुरु 15/07/2022	शनि 02/07/2033	बुध 14/12/2042
राहु 29/09/1997	गुरु 08/08/2007	शनि 13/09/2025	बुध 09/05/2034	केतु 15/07/2043
गुरु 05/01/2000	शनि 16/09/2008	बुध 14/07/2028	केतु 14/09/2034	शुक्र 15/03/2045
शनि 14/09/2002	बुध 13/09/2009	केतु 13/09/2029	शुक्र 14/09/2035	सूर्य 13/09/2045

मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष
13/09/2045	13/09/2052	14/09/2070	14/09/2086	14/09/2105
13/09/2052	14/09/2070	14/09/2086	14/09/2105	00/00/0000
मंगल 10/02/2046	राहु 27/05/2055	गुरु 01/11/2072	शनि 16/09/2089	बुध 07/01/2108
राहु 28/02/2047	गुरु 20/10/2057	शनि 15/05/2075	बुध 27/05/2092	00/00/0000
गुरु 04/02/2048	शनि 26/08/2060	बुध 20/08/2077	केतु 05/07/2093	00/00/0000
शनि 15/03/2049	बुध 15/03/2063	केतु 27/07/2078	शुक्र 04/09/2096	00/00/0000
बुध 12/03/2050	केतु 02/04/2064	शुक्र 27/03/2081	सूर्य 17/08/2097	00/00/0000
केतु 08/08/2050	शुक्र 03/04/2067	सूर्य 13/01/2082	चंद्र 18/03/2099	00/00/0000
शुक्र 08/10/2051	सूर्य 25/02/2068	चंद्र 15/05/2083	मंगल 27/04/2100	00/00/0000
सूर्य 13/02/2052	चंद्र 26/08/2069	मंगल 20/04/2084	राहु 04/03/2103	00/00/0000
चंद्र 13/09/2052	मंगल 14/09/2070	राहु 14/09/2086	गुरु 14/09/2105	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल बुध 14 वर्ष 8 मा 10 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

<b>शुक्र - बुध</b> 13/09/2025 14/07/2028	<b>शुक्र - केतु</b> 14/07/2028 13/09/2029	<b>सूर्य - सूर्य</b> 13/09/2029 01/01/2030	<b>सूर्य - चंद्र</b> 01/01/2030 03/07/2030	<b>सूर्य - मंगल</b> 03/07/2030 07/11/2030
बुध 07/02/2026 केतु 08/04/2026 शुक्र 28/09/2026 सूर्य 19/11/2026 चंद्र 13/02/2027 मंगल 14/04/2027 राहु 16/09/2027 गुरु 01/02/2028 शनि 14/07/2028	केतु 08/08/2028 शुक्र 18/10/2028 सूर्य 09/11/2028 चंद्र 14/12/2028 मंगल 08/01/2029 राहु 13/03/2029 गुरु 09/05/2029 शनि 15/07/2029 बुध 13/09/2029	सूर्य 19/09/2029 चंद्र 28/09/2029 मंगल 04/10/2029 राहु 21/10/2029 गुरु 05/11/2029 शनि 22/11/2029 बुध 07/12/2029 केतु 14/12/2029 शुक्र 01/01/2030	चंद्र 16/01/2030 मंगल 27/01/2030 राहु 23/02/2030 गुरु 20/03/2030 शनि 18/04/2030 बुध 13/05/2030 केतु 24/05/2030 शुक्र 24/06/2030 सूर्य 03/07/2030	मंगल 10/07/2030 राहु 29/07/2030 गुरु 15/08/2030 शनि 05/09/2030 बुध 23/09/2030 केतु 30/09/2030 शुक्र 21/10/2030 सूर्य 28/10/2030 चंद्र 07/11/2030
<b>सूर्य - राहु</b> 07/11/2030 02/10/2031	<b>सूर्य - गुरु</b> 02/10/2031 20/07/2032	<b>सूर्य - शनि</b> 20/07/2032 02/07/2033	<b>सूर्य - बुध</b> 02/07/2033 09/05/2034	<b>सूर्य - केतु</b> 09/05/2034 14/09/2034
राहु 27/12/2030 गुरु 09/02/2031 शनि 02/04/2031 बुध 18/05/2031 केतु 06/06/2031 शुक्र 31/07/2031 सूर्य 17/08/2031 चंद्र 13/09/2031 मंगल 02/10/2031	गुरु 10/11/2031 शनि 26/12/2031 बुध 06/02/2032 केतु 23/02/2032 शुक्र 12/04/2032 सूर्य 26/04/2032 चंद्र 21/05/2032 मंगल 07/06/2032 राहु 20/07/2032	शनि 13/09/2032 बुध 02/11/2032 केतु 22/11/2032 शुक्र 19/01/2033 सूर्य 05/02/2033 चंद्र 06/03/2033 मंगल 26/03/2033 राहु 17/05/2033 गुरु 02/07/2033	बुध 15/08/2033 केतु 02/09/2033 शुक्र 24/10/2033 सूर्य 09/11/2033 चंद्र 05/12/2033 मंगल 23/12/2033 राहु 07/02/2034 गुरु 21/03/2034 शनि 09/05/2034	केतु 16/05/2034 शुक्र 07/06/2034 सूर्य 13/06/2034 चंद्र 24/06/2034 मंगल 01/07/2034 राहु 20/07/2034 गुरु 06/08/2034 शनि 27/08/2034 बुध 14/09/2034
<b>सूर्य - शुक्र</b> 14/09/2034 14/09/2035	<b>चंद्र - चंद्र</b> 14/09/2035 14/07/2036	<b>चंद्र - मंगल</b> 14/07/2036 12/02/2037	<b>चंद्र - राहु</b> 12/02/2037 14/08/2038	<b>चंद्र - गुरु</b> 14/08/2038 14/12/2039
शुक्र 14/11/2034 सूर्य 02/12/2034 चंद्र 01/01/2035 मंगल 23/01/2035 राहु 18/03/2035 गुरु 06/05/2035 शनि 03/07/2035 बुध 24/08/2035 केतु 14/09/2035	चंद्र 09/10/2035 मंगल 27/10/2035 राहु 12/12/2035 गुरु 21/01/2036 शनि 10/03/2036 बुध 22/04/2036 केतु 09/05/2036 शुक्र 29/06/2036 सूर्य 14/07/2036	मंगल 27/07/2036 राहु 28/08/2036 गुरु 25/09/2036 शनि 29/10/2036 बुध 28/11/2036 केतु 10/12/2036 शुक्र 15/01/2037 सूर्य 26/01/2037 चंद्र 12/02/2037	राहु 06/05/2037 गुरु 18/07/2037 शनि 12/10/2037 बुध 29/12/2037 केतु 30/01/2038 शुक्र 01/05/2038 सूर्य 29/05/2038 चंद्र 13/07/2038 मंगल 14/08/2038	गुरु 18/10/2038 शनि 03/01/2039 बुध 13/03/2039 केतु 11/04/2039 शुक्र 01/07/2039 सूर्य 25/07/2039 चंद्र 04/09/2039 मंगल 02/10/2039 राहु 14/12/2039

## शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

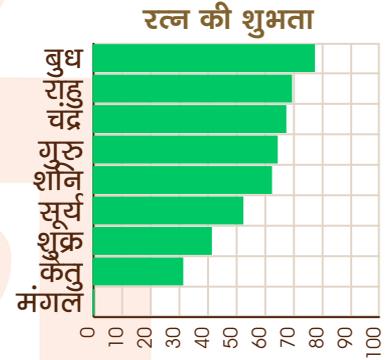
मूलांक	6
भाग्यांक	6
मित्र अंक	3, 4, 6, 9
शत्रु अंक	1, 7, 8
शुभ वर्ष	24,33,42,51,60
शुभ दिन	बुध, शुक्र, शनि
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र, शनि
मित्र राशि	मीन, मेष
मित्र लग्न	कन्या, कुम्भ, मेष
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	77%	दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य, सुख
गोमेद	राहु	69%	व्यावसायिक उन्नति
मोती	चंद्र	67%	धन
पुखराज	गुरु	64%	व्यावसायिक उन्नति, दम्पति
नीलम	शनि	62%	दम्पति, दुर्घटना से बचाव, भाग्योदय
माणिक्य	सूर्य	52%	दम्पति, पराक्रम
हीरा	शुक्र	41%	दुर्घटना, व्यय, सन्तति कष्ट
लहसुनिया	केतु	31%	ग्रह कलेश, दुर्घटना
मूंगा	मंगल	0%	शत्रु व रोग, हानि



### दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	14/09/2002	58%	54%	0%	89%	64%	52%	62%	69%	31%
केतु	13/09/2009	28%	54%	9%	77%	64%	52%	50%	56%	53%
शुक्र	13/09/2029	28%	54%	0%	83%	64%	58%	69%	75%	44%
सूर्य	14/09/2035	64%	73%	9%	77%	70%	16%	50%	56%	6%
चंद्र	13/09/2045	58%	79%	0%	83%	64%	41%	62%	56%	6%
मंगल	13/09/2052	58%	73%	21%	64%	70%	41%	62%	56%	44%
राहु	14/09/2070	28%	54%	0%	77%	64%	52%	69%	81%	6%
गुरु	14/09/2086	58%	73%	9%	64%	76%	16%	62%	69%	31%
शनि	14/09/2105	28%	54%	0%	83%	64%	52%	75%	75%	6%

## साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

### प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/03/1993-15/10/1993 10/11/1993-02/06/1995 10/08/1995-16/02/1996
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	23/07/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	06/09/2004-13/01/2005 26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007 16/07/2007-10/09/2009 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014 -----

### द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	31/05/2032-13/07/2034 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038 05/04/2039-13/07/2039 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044

### तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066 03/07/2066-30/08/2068 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073 -----

### शनि का ढैया फल

#### ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया  
साढ़ेसाती प्रथम ढैया  
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया  
साढ़ेसाती तृतीय ढैया  
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

#### फल

शुभ  
सम  
अशुभ  
सम  
शुभ

#### क्षेत्र

भाग्योदय  
स्वास्थ्य  
धन  
पराक्रम हानि  
सन्तति सुख

## साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

\*\*\*\*\*

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति षष्ठ भाव में है। यह भाव शत्रु रोग तथा ऋण आदि का प्रतिनिधित्व करने वाला भाव है। अतः इस भाव में मंगल के प्रभाव से आप एक पराकमी महिला होंगी तथा शत्रु या प्रतिद्वन्दियों को पराजित करने में समर्थ रहेंगी। साथ ही शरीर में रोगाभाव रहेगा एवं सामान्यतया आप स्वस्थता की ही अनुभूति करेंगी। आप पराकमी एवं कठोर कार्यों को सम्पन्न करने में रुचिशील रहेंगी। अतः आप (या कार्यरत न होने पर आपके पति) पुलिस सेना या अन्य पराकमी विभागों में कार्यरत हो सकती हैं। जीवन में ऋण आदि लेने की आपको कम ही आवश्यकता पड़ेगी तथा यदि लेंगी भी तो वापस करने में विशेष कठिनाई नहीं होगी जिससे मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा बनी रहेगी। साथ ही आप जीवन में इच्छित धन ऐश्वर्य एवं लाभ भी अर्जित करेंगी। आपके प्रभावी व्यक्तित्व से सभी लोग प्रभावित रहेंगे।

षष्ठ भाव से नवम भाव पर मंगल की चतुर्थ दृष्टि के प्रभाव से धर्म एवं धार्मिक कार्यकलापों में आपकी अल्प मात्रा में ही रुचि रहेगी तथा भाग्य की अपेक्षा आप कार्य करने पर अधिक विश्वास करेंगी। अतः आपके सांसारिक कार्यों की सिद्धि भाग्यबल की अपेक्षा परिश्रम पूर्वक कर्म करने से ही पूर्ण होगी। द्वादश भाव पर सप्तम दृष्टि के प्रभाव से आपका व्यय अधिक होगा तथा जीवन में शुभाशुभ दोनों प्रकार के व्ययों को करने में तत्पर रहेगी। यदा कदा आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधानों का भी सामना करना पड़ेगा लेकिन इनको दूर करने में आप समर्थ रहेंगी साथ ही दाम्पत्य सुख का आप सामान्य रूप से उपभोग करने में समर्थ होंगी। लग्न पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप समय समय पर गर्मी या रक्त विकार संबंधी परेशानी की अनुभूति कर सकती है लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप अपने समस्त कार्यों को उत्साह पराक्रम एवं परिश्रम से सम्पन्न करके उनमें इच्छित सफलताएं अर्जित करेंगी।

इस प्रकार षष्ठ भावस्थ मंगल की स्थिति आपके लिए सामान्यतया अच्छी रहेगी जिसके प्रभाव से आप धनऐश्वर्य से युक्त रहेंगी तथा परिवार का आधुनिक परिवेश में लालन पालन करने में समर्थ रहेंगी। जिससे पारिवारिक सुख शान्ति बनी रहेगी तथा उनसे आप पूर्ण सुख एवं सहयोग को प्राप्त करेंगी। अतः प्रसन्नता पूर्वक आप अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करने में समर्थ रहेंगी।



## कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाद्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाद्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

### काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में घातक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक जन्म से ही परिवार से पृथक रहता है। नाना-नानी, दादा-दादी का स्नेह आंशिक रूप में मिलता है। जातक को माता-पिता का विरह सहना पड़ता है। जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी दुःखमय हो जाता है। जातक की सन्तान कभी-कभी अस्वस्थ हो जाती है और जातक को थोड़ा बहुत चिन्ता परेशानी घेर लेती है। घर में सुख शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। नौकरी-व्यवसाय में व्यवधान उपस्थित होता है पर कालान्तर में वह स्वतः समाप्त हो जाता है। कभी जातक को पदच्युत होने का भय भी होता है और व्यापार व्यवसाय में परिश्रम करने के बाद भी विशेष रूप से जमता नहीं या आंशिक नुकसान उठाना पड़ता है। भागीदारी में मनमुटाव की स्थिति पैदा हो जाती है एवं जातक को आंशिक रूप में क्लेश भोगना पड़ता है।

इस योग के कारण जातक के अनेक शत्रु होते हैं। वे सब षड्यन्त्र रचते रहते हैं पर वे लोग अपने षड्यन्त्र में सफल नहीं हो पाते। मित्रगण समय-समय पर धोखा दे जाते हैं। जिससे जातक को थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है और सरकारी पदाधिकारी से अनबन रहती है तथा राज्यपक्ष से भी क्षति प्राप्त होती है। जातक की स्थिति कभी राजा तो कभी रंक जैसा जीवन व्यतीत होता है।

इस योग के प्रभाव से जातक के शरीर में रोग व्याधि समय-समय पर घेर लेती है। कभी चोट लगने का भय भी होता है। जातक को सुख शान्ति के लिए संघर्ष करना पड़ता है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक अच्छा समय आता है एवं उसमें प्रसिद्धि भी मिलती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।

9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

#### विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।

# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

### **पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :**

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृओं का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

### **आपकी कुण्डली में पितृदोष**

आपकी कुण्डली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी।

### **नोट :**

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह सूर्यबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

## ग्रह फल

### सूर्य

सप्तम भाव में सूर्य हो तो जातक चिन्तायुक्त राज्य से अपमानित, आत्मरत, कठोर, स्वाभिमानी एवं विवाहित जीवन दुःखी होता है।

धनु राशि में रवि हो तो जातक विवेकी, योगमार्गरत, बुद्धिमान्, धनी, आस्तिक, व्यवहार कुशल, दयालु, शान्त, लोकप्रिय एवं शीघ्र क्रोधित होने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति सप्तम भाव में है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके शुभ प्रभाव से धनलाभ प्राप्त करने में वे सफल होंगे तथा जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता एवं सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह कराने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। साथ ही आप उनकी विश्वास पात्र भी होंगी।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन में भी नित्य रुचिशील रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा कुछ सैद्धान्तिक मतभेद भी होंगे जिससे सम्बन्धों में क्षणिक तनाव एवं कटुता उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समयोपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनकी सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगी।

### चन्द्र

द्वितीयभाव में चन्द्रमा हो तो जातक परदेशवासी, भोगी, सुन्दर मधुरभाषी, भाग्यवान्, सहनशील एवं शान्तिप्रिय होता है।

कर्क राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सम्पत्तिवान्, श्रेष्ठबुद्धि, जलविहारी, सन्ततिवान्, कामी, कृतज्ञ, ज्योतिषी, उन्माद रोगी, स्त्रियों के प्रभाव में आ जाने वाला, चंचलमन, अच्छा स्वभाव वाला, सुन्दर, दयालु, आवेशात्मक एवं विदेश यात्रा की ओर रुचि वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपके शुभ प्रभाव से उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनकी पूर्ण वात्सल्य भावना रहेगी तथा जीवन में विद्य अध्ययन या धन संबंधी कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही उनसे आप अवसरानुकूल महत्वपूर्ण नैतिक शिक्षा भी ग्रहण करेंगी। इसके साथ ही वे आपको हार्दिक सहयोग देंगी। इस प्रकार आपके परस्पर संबंध भी अच्छे रहेंगे।

आप भी उनसे पूर्ण प्रभावित रहेंगी तथा उनके कथनानुसार ही अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगी। साथ ही जीवन में उनकी सेवा तथा वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से आप उनकी सहायता करती रहेंगी। अतः परस्पर मधुर संबंध एवं विश्वास होने के कारण आप आनन्दपूर्वक जीवन में उनका स्नेह प्राप्त करती रहेंगी।

## मंगल

छठेभाव में मंगल हो तो जातक बलवान्, धैर्यशाली, प्रबल जठराग्नि, कुलवन्त, प्रचण्ड शक्ति, शत्रुहन्ता, ऋणी, दादरोगी, कोधी, पुलिस अफसर, व्रण और रक्तविकार युक्त एवं अधिकव्यय करने वाला होता है।

वृश्चिक राशि में मंगल हो तो जातक नीति-दक्ष, अच्छी स्मरण शक्ति ईर्ष्यालु स्वभाववाला, बहुतहठी, अभिमानी, चोरों का नेता, पातकी एवं दुराचारी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों की आप प्रिय रहेंगी एवं उनसे सम्मान एवं स्नेह की नित्य आपको प्राप्ति होती रहेगी। उनका स्वास्थ्य भी ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति होती रहेगी। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको अपनी ओर से आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। सुख दुःख में वे पूर्ण रूपेण आपके साथ रहेंगे एवं शत्रु वर्ग से आपकी यत्नपूर्वक सुरक्षा करेंगे।

आपका भी उनके प्रति हार्दिक प्रेम रहेगा एवं उनके कल्याण संबंधी कार्यो को करने में तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण अल्प मात्रा में कटुता का भी आभास होगा लेकिन कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करके अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी।

## बुध

अष्टमभाव में बुध हो तो जातक दीर्घायु, अभिमानी, राजमान्य, कृषक, लब्धप्रतिष्ठ, मानसिक दुखी, कवि, वक्ता, न्यायाधीश, मनस्वी, धनवान् एवं धर्मात्मा होता है।

मकर राशि में बुध हो तो जातक कुलहीन, दुश्शील, मिथ्याभाषी, ऋणी, मूर्ख, डरपोक, व्यापार में रुचि लेने वाला, किफायतसार, चतुर एवं परिश्रमी होता है।

## गुरु

दशमभाव में गुरु हो तो जातक सुकर्म करने वाला, प्रसिद्ध और सम्मानित प्रतिष्ठित पद पर आसीन, सदाचारी, पुण्यात्मा, ऐश्वर्यवान्, साधु, चतुर, न्यायी, प्रसन्न, ज्योतिषी, सत्यवादी, शत्रुहन्ता, राजमान्य, स्वतन्त्र विचारक, मातृपितृ भक्त, लाभवान्, धनी एवं भाग्यवान् होता है।

मीन राशि में गुरु हो तो जातक लेखक, शास्त्रज्ञ, गर्वहीन, राजमान्य, शान्त, व्यवहार कुशल, दयालु, साहित्य प्रेमी, विरासत में धन सम्पत्ति प्राप्त करने वाला, साहसी एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

## शुक्र

अष्टम भाव में शुक्र हो तो जातक ज्योतिषी, क्रोधी, मनस्वी, दुखी, गुप्तरोगी, पर्यटनशील, परस्त्रीरत, विदेशवासी, निर्दयी, गुप्तविद्याओं के प्रतिरुचि एवं रोगी होता है।

मकर राशि में शुक्र हो तो जातक बलहीन, कृपण, ध्यरोगी, दुखी, मानी, नीच जाति की स्त्रियों में रुचि, सिद्धान्तहीन एवं अनैतिक चरित्र होता है।

## शनि

सप्तम भाव में शनि हो तो जातक क्रोधी, कामी, विलासी, अविवाहित रहना या दुःखी विवाहित जीवन, धन सुखहीन, भ्रमणशील, नीचकर्मरत, स्त्रीभक्त एवं आलसी होता है।

धनु राशि में शनि हो तो जातक व्यवहारज्ञ, पुत्र की कीर्ति से प्रसिद्ध सदाचारी, वृद्धावस्था में सुखी, सक्रिय, चतुर शान्तिप्रिय, दुःखी विवाहित जीवन एवं धनी होता है।

## राहु

दशम भाव में राहु हो तो जातक मितव्ययी, वाचाल, सन्ततिक्लेशी चन्द्रमा से युक्त राहु के होने पर राजयोग कारक अनियमित कार्यकर्ता एवं आलसी होता है।

मीन राशि में राहु हो तो जातक आस्तिक, कुलीन, शान्त, कलाप्रिय और दक्ष होता है।

## केतु

चतुर्थ भाव में केतु हो तो जातक, कार्यहीन, चंचल, वाचाल एवं निरुत्साही होता है।  
कन्या राशि में केतु हो तो जातक सदारोगी, मूर्ख, मन्दाग्निरोग एवं व्यर्थवादी होता है।

## दशा विश्लेषण

महादशा :- शुक्र  
( 13/09/2009 - 13/09/2029 )

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 13/09/2009 को आरंभ होकर 13/09/2029 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

शुक्र, जो स्वभावतः एक शुभ ग्रह है और संगीत, नाटक, अच्छे स्वाद, भावनात्मक आनन्द और मनोरंजन का द्योतक है। यह विवाह का कारक भी है। यह दो राशियों वृष तथा तुला का स्वामी है एवं मीन राशि में उच्च का जबकि कन्या राशि में निम्न का होता है। आपकी कुण्डली में यह अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव में स्थित यह आपकी जन्म कुण्डली के द्वितीय भाव को देख रहा है और इस भाव पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। भाव, जिसमें यह स्थित है अर्थात् अष्टम भाव दीर्घायु, पैतृक गुण, पैतृक सम्पत्ति, दुर्घटनाएँ, धोखे से मृत्यु, भाग्यहीनता, उदासी और अपयश का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

अष्टम भाव में स्थित शुक्र भाव को प्रबलित कर रहा है जो दीर्घ आयु का द्योतक है। इसलिए आपकी उम्र काफी लम्बी होगी तथा आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या या दुर्घटना नहीं होगी।

अर्थ संपत्ति :

शुक्र अष्टम भाव में स्थित है जो आपके वित्तीय जीवन में काफी उतार-चढ़ाव देगा। आपकी जन्म कुण्डली में यह अष्टम भाव से द्वितीय भाव, जो धन का भाव है, को देख रहा है। अतः इस दशा काल में धन की कमी नहीं होगी और आप चल तथा अचल सम्पत्ति में वृद्धि कर पाने की स्थिति में होंगे। आपको कुछ विरासती सम्पत्ति भी मिल सकती है।

व्यवसाय :

व्यावसायिक रूप से सुभ्यस्त आप जमीन, वाहन, अधिकार, तथा पद प्राप्त करेंगे। आप अपने व्यावसायिक क्षेत्र में ख्याति करेंगे। आप कोई भी व्यवसाय करें, सफल होंगे। आप शिक्षित होंगे और आपका झुकाव धर्म की ओर होगा।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन सौहार्द पूर्ण तथा नियमित होगा। जीवन में कुछ उदासी तथा बाधाएं आएंगी जिन्हें आप पार कर लेंगे। आपके पिता कुछ कठिनाइयों से गुजर सकते हैं अपने कार्य में असफल हो सकते हैं।

**अंतर्दशा :- शुक्र - बुध  
( 13/09/2025 - 14/07/2028 )**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 13/09/2009 को प्रारंभ हुई थी और वद 13/09/2029 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास रहेगी 13/09/2025 जो आपके लिए 14/07/2028 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है।

अष्टम भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के द्वितीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप विद्वान और ज्ञानवान बनेंगे। छात्रवृत्ति प्राप्त हो सकती है। धन का संचय होगा, विरासत में भी धन मिल सकता है। योग्यता और मृदु स्वभाव के लिए प्रशंसा मिलेगी।

आप दीर्घायु होंगे मगर स्वास्थ्य दुर्बल हो सकता है। स्वस्थ रहने के लिए अधिक प्रयास करना श्रेयस्कर रहेगा।

**अंतर्दशा :- शुक्र - केतु  
( 14/07/2028 - 13/09/2029 )**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 13/09/2009 को प्रारंभ हुई थी और 13/09/2029 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में केतु अंतर्दशा 1 वर्ष 2 मास की होती है। आपके लिए यह 14/07/2028 को प्रारंभ होकर 13/09/2029 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है।

इसकी कोई राशि नहीं होती और न ही यह किसी राशि का स्वामी होता है।

चतुर्थ भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के 10वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके कार्यों में बाधाएं आ सकती हैं। अचानक कुछ घटित हो सकता है। माता का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। अचल संपत्ति के मामलों में घाटा हो सकता है। खुशियां कम हो सकती हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए केतु के वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें। निम्न उपाय भी लाभकारी हैं:

- भूरा कुत्ता पालें।

**महादशा :- सूर्य**  
**( 13/09/2029 - 14/09/2035 )**

सूर्य की महादशा 13/09/2029 आरम्भ हो रही है और 6 वर्षों की अवधि के बाद 14/09/2035 समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य सप्तम भाव में अवस्थित है। सूर्य शारीरिक शक्ति, उच्च प्रतिष्ठा, नेता, प्रशासन, राज्य आदि का प्रतिनिधित्व करता है जबकि सप्तम भाव जीवनसाथी, प्रतिष्ठा की प्राप्ति और व्यवसाय में साझेदारी को सूचित करता है। अतः इस दशा में आपको मान-सम्मान मिलेगा और आप पारिवारिक मामलों में शामिल होंगे।

**स्वास्थ्य :**

आपका स्वास्थ्य सामान्यतया उत्तम रहेगा। आपकी शारीरिक संरचना उत्तम है। आपकी जीवन-शक्ति में वृद्धि होगी।

आप में सभी समस्याओं का सामना करने की शक्ति और उत्साह विद्यमान हैं। आप स्वास्थ्य लाभ करेंगे। उत्तम स्वास्थ्य को बरकरार रखने के लिये सात्विक तथा सन्तुलित भोजन करना चाहिए। आप सरदर्द और प्रदाह से पीड़ित हो सकते हैं और यदि असावधान रहे तो हृदय की पीड़ा भी हो सकती है।

**अर्थ :**

आप भाग्यशाली हैं और पर्याप्त संसाधनयुक्त हैं। आप स्वभाव से उदार हैं और आपके लिये धन की रक्षा करना कठिन है। आपको आपके जीवनसाथी से धन की प्राप्ति हो सकती है। आपको अचल सम्पत्ति अथवा माता से लाभ मिल सकता है। साझेदारी अथवा विदेश से व्यापार लाभदायक सिद्ध होगा। इस दशा में आपको पर्याप्त संसाधनों की प्राप्ति होगी।

**व्यवसाय :**

आपको शक्ति, प्रभुत्व, सफलता, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी। आप एक जन्मजात नेता हैं और इस दशा में संगठनों तथा संस्थाओं के प्रधान हो सकते हैं। आप बड़े निगमों या संगठनों के प्रबन्धक के पद के लिये सर्वाधिक उपयुक्त हैं। आप सैन्य अथवा राजनीतिक सेवा, प्रशासकीय कार्य, तकनीकी वैज्ञानिक सेवाओं का चयन अपनी जीवन वृत्ति के लिये कर सकते हैं। रत्नों, पत्थरों, संगमरमर, अनाज और उपकरण आदि का व्यवसाय लाभदायक हो सकता है। पेशेवर खिलाड़ियों को उत्तम और भाग्यशाली अवसर प्राप्त हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों की आय में वृद्धि के साथ पदोन्नति होगी, डच्चाधिकारियों अनुग्रह प्राप्त होगा और कार्य-क्षेत्र में सौहार्द्रपूर्ण वातावरण मिलेगा। व्यवसायियों और व्यापारियों के लिये यह दशा भाग्यशाली होगी। प्रतिद्वन्द्वियों पर विजय, उच्च पद प्राप्ति, यश और कार्यों में सफलता के संकेत भी मिलते हैं। आय तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

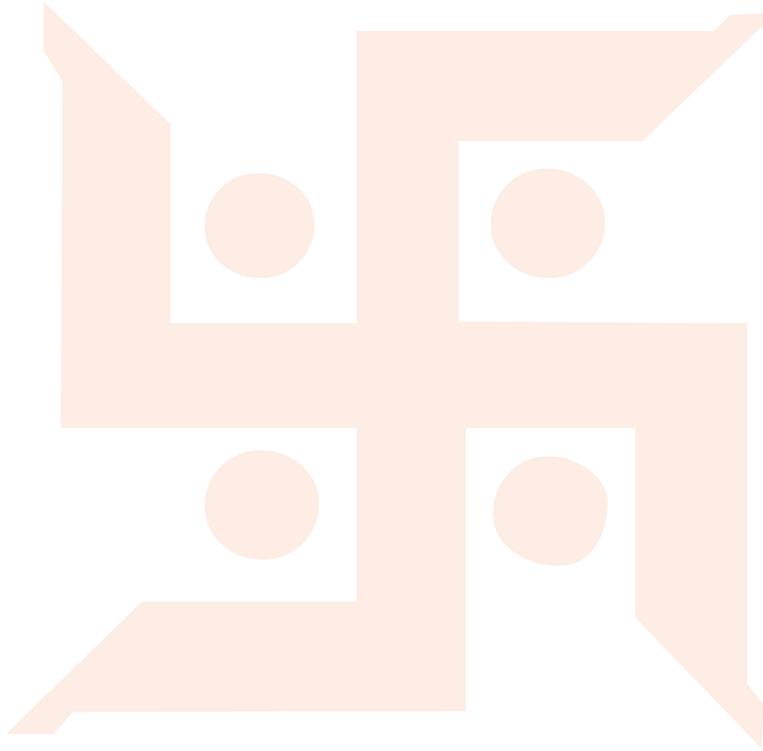
**परिवार (कुटुम्ब) :**

बच्चों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। आपको अपने विकल्पों के प्रति हठधर्मी नहीं होना चाहिए और अपने विचार दूसरों पर आरोपित नहीं करने चाहिए। अन्यथा आपके

वैवाहिक जीवन में कलह उत्पन्न हो सकता है। आपकी माता को सारी सुख-सुविधाएं मिलेंगी और उनकी अचल सम्पत्ति में वृद्धि होगी जबकि आपके पिता की मनोकामनाएं पूरी होंगी और उनकी आय में वृद्धि होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को सट्टे तथा निवेश में लाभ मिलेगा जबकि बड़े भाई-बहनों को भाग्यशाली अवसर की प्राप्ति हो सकती है।

शिक्षा :

आप अपने अध्ययन में अच्छा करेंगे। भौतिकी अर्थशास्त्र तथा कला आदि आपके उपयुक्त हैं।



**अंतर्दशा :- सूर्य - सूर्य  
( 13/09/2029 - 01/01/2030 )**

आपके लिए सूर्य की महादशा 13/09/2029 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 3 मास 18 दिन होकर 01/01/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा का स्वामी सूर्य पिता, अधिकार, शक्ति, नाम, प्रसिद्धि, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अंतर्दशा की अवधि में आप में शक्ति और ऊर्जा भरपूर रहेगी। किसी भी स्थिति से निबटने के लिए आत्मविश्वास रहेगा। प्रसिद्ध संगठनों के साथ आपकी भागीदारी होगी। विवाह, अनुबंध या भागीदारी से धन प्राप्त हो सकता है। जनमानस से संबंध मधुर रहेंगे। इस अवधि में किसी महत्वपूर्ण समझौते या ठेके पर हस्ताक्षर हो सकते हैं। राजनीति में सफलता मिलेगी, विदेश यात्रा भी संभव है।

आपके पिता की आय में वृद्धि संभव है। उनकी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति होगी। माता के सुख में वृद्धि होगी। संतान की क्रियाशीलता बढ़ेगी। जीवनसाथी सब फैसले स्वयं करना पसंद करेंगे। सेवारत जातकों के धन और आय में वृद्धि होगी। उद्यमियों, व्यापारियों, सलाहकारों की आय बढ़ेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा पर अत्यधिक परिश्रम से बचना चाहिए। चिड़चिड़ेपन और आवेग से बचें। उच्च रक्तचाप या संक्रमण से ग्रस्त हो सकते हैं। शीतल पदार्थ जैसे केसर, मुलैठी आदि से औषधि स्नान करें और ध्यान का अभ्यास करें।

**अंतर्दशा :- सूर्य - चन्द्र  
( 01/01/2030 - 03/07/2030 )**

आपकी सूर्य की महादशा 13/09/2029 को प्रारंभ हुई थी। इसमें दूसरी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 6 मास है और यह 03/07/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मस्तिष्क, घर, माता और सौंदर्य का कारक है।

चंद्रमा की अंतर्दशा में आपके भाग्य में उतार-चढ़ाव आ सकते हैं, अतः लापरवाही और अकर्मठता से बचें। परिवार में सुख-शांति रहेगी। संतान प्रगति करेगी और नाम कमाएगी। वे विभिन्न गतिविधियों में भाग लेंगे। माता के साथ आपके संबंध मधुर रहेंगे। धन और सफलता के संदर्भ में माता का यह समय भाग्यशाली रहेगा। पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। सेवारत जातकों के लिए समय लाभकारी है। वरिष्ठ अधिकारी आप से प्रसन्न रहेंगे।

आपके जीवनसाथी को अचानक धन-संपदा की प्राप्ति हो सकती है। स्वास्थ्य की देखभाल ठीक से करें। प्रतिद्वंद्वी आपको बदनाम करने की कोशिश करेंगे, मगर सफल नहीं होंगे। वे परिवार में झगड़ा खड़ा करने का प्रयास करेंगे। मगर उन्हें कामयाबी नहीं मिलेगी। आपको उत्तम भोजन, धन और सुविधाओं की उपलब्धि रहेगी।

गले और पाचनत्रं से संबंधित मामूली परेशानी हो सकती है। भाग्यवर्धन हेतु चंद्र

के मंत्र का जाप करें।

ॐ सों सोमाय नमः

**अंतर्दशा :- सूर्य - मंगल**  
**( 03/07/2030 - 07/11/2030 )**

आपकी सूर्य की महादशा 13/09/2029 को प्रारंभ हो रही है। इसमें तृतीय अंतर्दशा मंगल की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन है। यह अंतर्दशा 07/11/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, ऊर्जा और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप सक्रिय और ऊर्जावान रहेंगे तथा मानसिक या शारीरिक बाधाओं को दृढ़ता से पार करेंगे। आपको प्रसिद्धि और सफलता की प्राप्ति होगी। प्रतिस्पर्धा में भाग लेने के लिए यह उत्तम समय है। विरोधी या प्रतिद्वंद्वी आपको हानि नहीं पहुंचा सकेंगे।

आपकी संतान बहुत सक्रिय और ऊर्जावान होगी। वे खेलकूद में भाग लेंगे। जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार का अप्रत्याशित खर्चा हो सकता है। माता में उत्साह और ऊर्जा रहेंगे। पिता को सत्ता और अधिकार प्राप्त होंगे। आपका खर्चा बढ़ सकता है। वाहन खरीद/बेच सकते हैं। बड़े भाई-बहनों के जीवन में परिवर्तन हो सकता है। मामा पक्ष के लोग भाग्यशाली रहेंगे।

सेवारत जातकों के लिए समय भाग्यशाली है। व्यापारियों को ऋण प्राप्त हो सकता है या ओवरड्राफ्ट सुविधा मिल सकती है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। फोड़े-फुंसी, ज्वर आदि हो सकते हैं। शुभत्व में वृद्धि के लिए हनुमान चालीसा का पाठ करें।

**अंतर्दशा :- सूर्य - राहु**  
**( 07/11/2030 - 02/10/2031 )**

आपके लिए सूर्य की महादशा 13/09/2029 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चतुर्थ अंतर्दशा राहु की होगी। यह 07/11/2030 को प्रारंभ होकर 02/10/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, दादा और तीर्थयात्रा का कारक है।

इस अवधि में आपकी तीर्थयात्रा हो सकती है या धर्म में रुचि होगी। आप अपने कार्य-व्यवसाय में अधिक समय व्यतीत करेंगे जिससे अन्य गतिविधियों को हानि हो सकती है। आपको अचल संपत्ति और वाहन की प्राप्ति होगी। जायदाद से किराये आदि की आमदनी बढ़ेगी। सरकार से भी लाभ होगा।

जीवनसाथी के कार्य में कुछ परिवर्तन हो सकता है। पिता को धन लाभ होगा। माता को घरेलू सुख रहेगा और भौतिक सुख उपलब्ध होंगे। छोटे भाई-बहनों के जीवन में अवांछित परिवर्तन हो सकते हैं। बड़े भाई-बहनों के अवांछित खर्च और व्यर्थ की यात्राओं

का योग है। आपकी संतान स्पर्धाओं में सफल रहेगी। उनकी उन्नति और समृद्धि का भाग्यशाली समय है।

अगर आप सेवारत हैं तो समय बहुत उत्तम है। परामर्शदाताओं और व्यापारियों को समृद्धि प्राप्त होगी। राजनीतिज्ञों को सफलता मिलेगी।

घुटनों की देखभाल ठीक से करें। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए भैरव के रूप में शिवजी की पूजा शनिवार को करें।

